हाल ही में कुछ बच्चों ने अनौपचारिक बातचीत में कहा, ''गणित! समझ में नहीं आता।'' यह बच्चे शहरी हैं। ऐसा ही भाव ग्रामीण बच्चों में अंग्रेजी को लेकर देखा जा सकता है। क्या वास्तव में इन विषयों की प्रकृति ऐसी है जिसकी वजह से यह विषय बच्चों को समझ में नहीं आते या फिर इसके अलावा कोई और भी कारण हैं? क्या किन्हीं विषयों के प्रति बच्चों की रुचि-अरुचि का सवाल बच्चे का नितांत आंतरिक और व्यक्तिगत मसला है? अनेक बार इस समस्या को जिस तरह पेश किया जाता है उससे लगता है कि बच्चों की रुचि आंतरिक कारणों पर निर्भर करती है और बहुधा इसे जन्मजात लक्षणों के रूप में समझ लिया जाता है। संगीत और कलाओं के प्रति बच्चों के रुझान को अक्सर इसी नजरिए से प्रस्तुत किया जाता है।

शिक्षा और सीखना एक-दूसरे के साथ गहरे जुड़े हैं लेकिन आजकल यह आम शिकायत है कि बच्चे स्कूलों में सीख नहीं पा रहे हैं। फिर वे क्या वजह हैं कि वे नहीं सीख पा रहे हैं? इस समस्या पर विचार करते हुए उन बाहरी कारणों को नजरंदाज कर दिया जाता है जो बच्चों की सीखने में रुचि या अरुचि निर्मित करते हैं। बाहरी से यहां आशय कक्षा वातावरण, शिक्षकों का सीखने के प्रति नजरिया और बच्चों को प्रेरित करने के तरीके से है।

इस अंक के मुख्य लेख 'प्रेरणा और सीखना' में कमला वी. मुकुंदा इस समस्या पर मनोविज्ञान के नजरिए से विचार करती हैं। (यह लेख अध्यापकों और शिक्षा में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए लिखी गई सुपाठ्य और गंभीर पुस्तक 'वाट डिड यू आस्क एट स्कूल टुडे' के 'मोटीवेशन' अध्याय का अंग्रेजी से अनुवाद है। लेखिका इस पुस्तक में बच्चों के सीखने से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर, खासकर स्कूली शिक्षा के संदर्भ में विचार करती हैं।) वे कहती हैं कि सीखने की इच्छा स्वभाविक मानवीय गुण है। सभी मनुष्यों के लिए प्रेरणा आवश्यक है क्योंकि यह इंसान को किसी भी काम को करने की दिशा में आगे बढ़ाती है जोकि इंसानों के बचाव के लिए जरूरी है। यदि यह सही है तो फिर वह समस्या क्या है कि बच्चे किन्हीं विषयों को सीखने में अरुचि प्रदर्शित करते हैं? लेखिका बताती हैं कि उत्प्रेरणा को दो तरह से समझा जाता है। एक, बाहरी उत्प्रेरणा और दूसरे, आंतरिक उत्प्रेरणा। किसी कार्य को करने के लिए बाहरी उत्प्रेरणा के मायने उस कार्य को करवाने के लिए किसी बाहरी कारक को जोड़ देना जैसे कि किसी काम को करने के लिए पुरस्कार और दण्ड का प्रवाधान करना जबकि आन्तरिक उत्प्रेणा के लिए स्वयं की सीखने की इच्छा को विकसित करना होता है।

हम अक्सर देखते हैं कि किसी काम को करने के लिए माता-पिता या शिक्षक बाहरी परिणाम के रूप में पुरस्कार अथवा दण्ड का प्रावधान करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बाहरी कारक के अभाव में बच्चों में सीखने या किसी काम को करने की आन्तरिक प्रेरणा क्षीण होने लगती है। कमला मुकंदा बच्चों के सीखने पर बाहरी और आंतरिक उत्प्रेरणा के पड़ने वाले प्रभावों को दुनियाभर में मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के हवाले से सामने रखती हैं और बताती हैं कि बाहरी उत्प्रेरण के खत्म होते ही बच्चे सीखने में रुचि लेना बंद कर देते हैं और धीरे-धीरे उस विषय में उनकी रुचि कम होने लगती है। वे कहती हैं कि इसमें शिक्षक की अहम् भूमिका होती है, अर्थात् शिक्षक के मन में कक्षायी स्थिति के बारे में जो विचार होते हैं वे कक्षा वातावरण और उत्प्रेरणा को प्रभावित करते हैं। शिक्षक के नजरिये कि वह कक्षा में नियंत्रण स्थापित करना

चाहता है या फिर वह बच्चों को स्वायत्ता प्रदान करना चाहता है; इन विचारों का शिक्षक के कार्यकलाप पर गंभीर असर होता है।

लेखिका उत्प्रेरणा को उपलब्धि के माध्यम के रूप में देखने के बजाय परिणाम के तौर पर देखने की बात करती हैं और कहती हैं कि यदि शिक्षा के उद्देश्य आत्म-चिंतन, अपनी भावनाओं और उत्प्रेरणा की स्थिति को समझना है तो किसी भी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वे स्पर्धा को कक्षा से बाहर रखें। वे कहती हैं कि सीखने की उत्प्रेरणा को शिक्षा के वांछनीय नतीजे के तौर पर भी देखा जा सकता है। अर्थात् विद्यार्थी सीखने के लिए प्रेरित हों। निश्चित तौर पर पाठकों को यह लेख जो अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है उसमें लेखिका का बतौर अध्यापक काम करना महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक, शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तिओं और माता-पिताओं के लिए यह लेख एक संदर्भ सामग्री है जिसे वे अपने बच्चों के सीखने और उसके लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करने में उपयोग कर सकते हैं।

विकास के विमर्श की गहमागहमी के बीच जेंडर समानता और न्याय के मुद्दे मुखर हुए हैं। एक तरफ विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ी है वहीं हमारे समाज के मूल में जेंडर असमानता की समस्या गहरे पैठी हुई है। इस समस्या के संदर्भ में शिक्षा की क्या भूमिका रही है, इसे मौजूदा परिदृश्य में जनगणना के संदर्भ में समझने का प्रयास प्रज्ञा जोशी के लेख 'पढ़िए गीता बनिए सीता' में किया गया है। यह लेख 2011 की जनगणना से प्राप्त आंकडों का विश्लेषण शिक्षा और जेंडर की समस्याओं के संदर्भ में करता है और राजस्थान के संदर्भ में साक्षरता दर में बढ़ोतरी और लिंगानुपात में आने वाली गिरावट को एक साथ जोड़कर देखता है। लेख इस तथ्य को उजागर करता है कि साक्षरता दर की बढ़त ने जेंडर की नई समस्याओं को जन्म दिया है और यदि शिक्षा को इस क्षेत्र में सार्थक हस्तक्षेप करना है तो शिक्षा की विषयवस्तु की पड़ताल करने की आवश्यकता है। लेख में कहा गया है कि स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा जेंडर विषमताओं को पाटने में नाकामयाब रही है। इस बात पर जोर दिया गया है कि जेंडर आधारित मुद्दों को महिला के प्रश्न के रूप में विमर्श की दहलीज के बाहर करके और एक झरोखे से उन्हें केवल झांकने की अनुमति देकर प्रतीकात्मक उपस्थिति से इन समस्याओं का हल नहीं निकलेगा और न ही विकास का रथ आगे जा पाएगा। लेख सुझाता है कि राज्य के स्तर पर इसे प्राथमिकता देनी होगी कि जेंडर न्याय व समता के मूल्यों को पाठ्यचर्या और शिक्षा की आधारभूत संरचना में शामिल किया जाए ताकि जेंडर संवेदनशीलता एक जीवन शैली के रूप में समाज के हर एक तबके में पनपे।

लोक साहित्य को हमारी पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकें किस तरह देखती हैं, यह प्रश्न आज भी विश्लेषण के लिए खुला है। राजस्थानी भाषा के जाने-माने साहित्यकार विजयदान देथा का साक्षात्कार लोक बाल साहित्य की स्थिति पर केन्द्रित है। विजयदान देथा कहते हैं कि जानवरों की बातें लिखने से ही बच्चों का साहित्य नहीं बन जाता। इसके लिए बच्चे के मनोविज्ञान, उसकी रुचि, उसके अनुभव, उसके मानसिक विकास एवं उसकी उम्र, आदि को ध्यान में रखकर ही अच्छे बाल साहित्य की रचना की जा सकती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही बाल साहित्य में शब्द संख्या, विषयवस्तु आदि तय होती है।

निरंजन सहाय अपने लेख में समाज में परंपरागत रूप से चले आ रहे वर्चस्व और शिक्षा में भी प्रभुत्वशाली तबके के वर्चस्व की आधुनिक शिक्षा के विकास के संदर्भ में पड़ताल करते हैं। वे कहते हैं कि आज भी यह वर्चस्व अनेकानेक तरीकों से हमारी शिक्षा व्यवस्था में काबिज है। अंग्रेजी का शिक्षा पर बढ़ता दबदबा इसी का परिचायक है। इसी के साथ 'चकमक' के तीन सौ वे अंक की समीक्षा चकमक के बाल साहित्य के क्षेत्र में योगदान का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। ◆